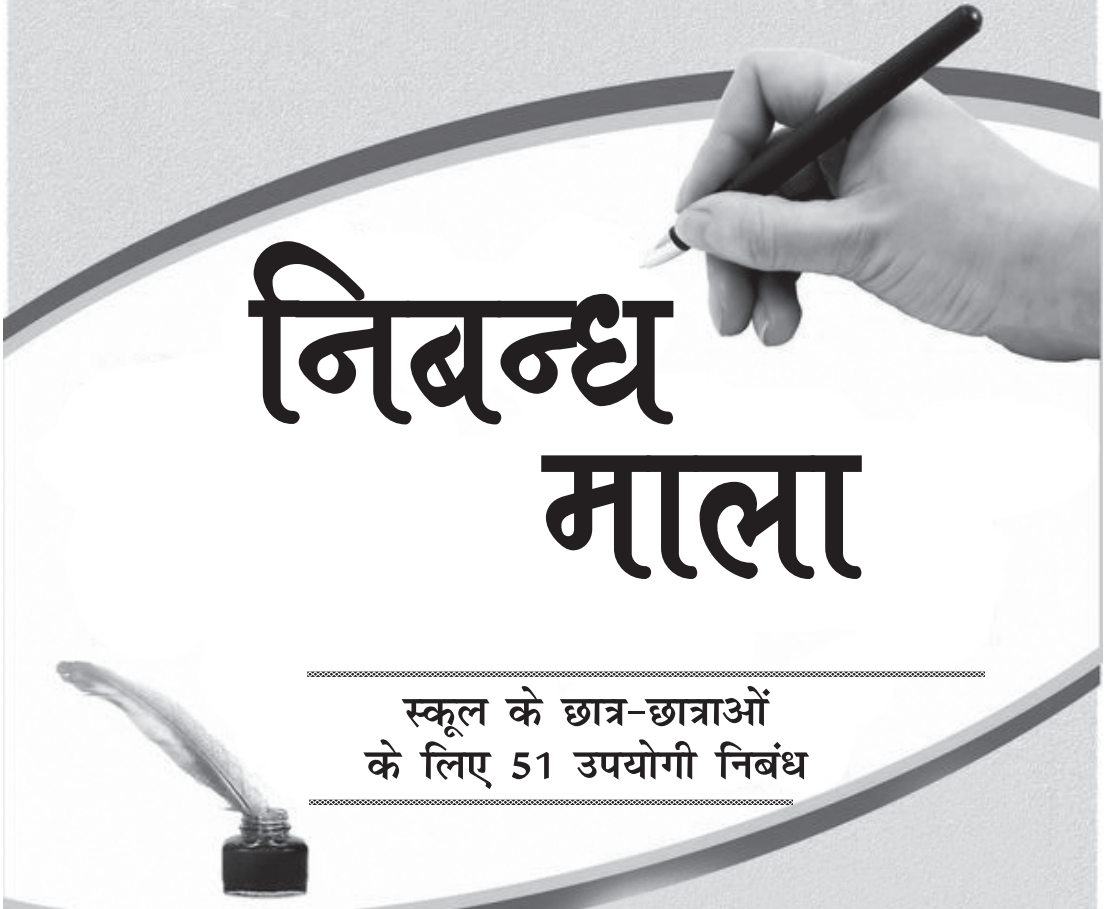


निबन्ध माला

स्कूल के छात्र-छात्राओं
के लिए 51 उपयोगी निबंध

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

☎ 23240026, 23240027, 23240028

✉ info@vspublishers.com • 🌐 www.vspublishers.com

Online Brandstore: amazon.in/vspublishers

क्षेत्रीय कार्यालय : हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)

बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद-500 095

☎ 040-24737290

✉ vspublishershyd@gmail.com

फ़ॉलो करें:

BUY OUR BOOKS FROM: AMAZON FLIPKART

© कॉपीराइट: वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-711908-8-6

नवीन संस्करण

अस्वीकरण

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं। पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

मुद्रक : परम ऑफसेटर्स, ओखला, नई दिल्ली-110020

प्रकाशकीय

वी एण्ड एस पब्लिशर्स जनहित, आत्मविकास एवं शैक्षणिक सम्बन्धी पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। पुस्तक प्रकाशित करने के क्रम में इस बार हमने **'निबन्ध माला'** प्रकाशित किया है।

प्रस्तुत निबन्ध-संग्रह स्कूल के छात्र/छात्राओं एवं अन्य प्रतियोगी परीक्षा को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। इस पुस्तक में बारह प्रकार के निबन्ध दिये गये हैं, जिनमें- समाज, विद्यार्थी जीवन, जीवन मूल्य, आत्मकथा, दृश्यवर्णन, साहित्य, संदेशगर्भित, राजनीति, ज्ञान-विज्ञान,त्योहार, त्रासदी और महान् व्यक्तित्व पर आधारित निबन्ध हैं। सभी निबन्ध आधुनिकतम जानकारी एवं नई विचारधाराओं से परिपूर्ण हैं। इन निबन्धों में वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक और भावात्मक निबन्ध शामिल है।

निरन्तर अभ्यास से निबन्ध की कला में परिपक्वता आती है। इसलिए छात्रों से सलाह है कि वे निबन्ध पढ़कर इसका अभ्यास अवश्य करें। प्रस्तुत पुस्तक में इस बात का खास ध्यान रखा गया है कि निबन्ध की भाषा-शैली सरल, सुगम एवं बोधगम्य हो।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक स्कूल के सभी वर्गों के छात्र-छात्राओं एवं प्रतियोगी परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

विषय-सूची

1. समाचार-पत्र 7
2. भ्रष्टाचार के बढ़ते कदम और उसकी रोकथाम 9
3. युवा-पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव.. 11
4. कमरतोड़ महँगाई, समस्या एवं समाधान 14
5. एड्स की चुनौती अथवा एड्स जानकारी ही बचाव 16
6. नशाखोरी एक अभिशाप 19
7. मेरा गाँव या ग्राम्य जीवन..... 22
8. आधुनिक युग में खेलों का महत्त्व. 24
9. भारतीय किसान 26
10. सहशिक्षा..... 28
11. छात्र एवं अनुशासन 30
12. विद्यार्थी जीवन 33
13. परीक्षा की तैयारी..... 35
14. विद्यालय और नैतिक शिक्षा 37
15. नारी शिक्षा..... 39
16. साक्षरता..... 41
17. भाग्य और पुरुषार्थ 43
18. राष्ट्रीय एकता..... 45
19. यदि मैं अध्यापक बनूँ!..... 47
20. मेरा जीवन लक्ष्य..... 49
21. दिल्ली मेट्रो रेल 51
22. राष्ट्रभाषा हिन्दी..... 53
23. मेरा प्रिय काव्य (रामचरितमानस).. 55
34. सादा जीवन उच्च विचार..... 57
25. साम्प्रदायिकता और राजनीति 60
26. इक्कीसवीं सदी का भारत..... 63
27. मानव जीवन की प्रगति में कम्प्यूटर का महत्त्व.....65
28. अन्तरिक्ष विज्ञान और भारत..... 67
29. वन एवं पर्यावरण..... 70
30. विज्ञान : वरदान या अभिशाप..... 71
31. स्वतन्त्रता दिवस 73
32. गणतन्त्र दिवस..... 75
33. दीपावली..... 77
34. दशहरा अथवा विजयादशमी..... 79
35. रक्षाबन्धन 81
36. होली..... 83
37. सुनामी : एक भयानक त्रासदी..... 85
38. महात्मा गांधी..... 87
39. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 89
40. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद..... 91
41. राजा राममोहन राय..... 92
42. सचिन तेंदुलकर 94
43. मिल्खा सिंह..... 95
44. मदर टेरेसा 96
45. जगदीशचन्द्र बसु..... 98
46. कल्पना चावला..... 99
47. सुनीता विलियम्स..... 100
48. रवीन्द्र नाथ टैगोर 103
49. प्रेमचंद..... 106
50. दादासाहब फाल्के..... 107
51. जे.आर.डी. टाटा 109

1

समाचार-पत्र

मानव पृथ्वी पर सबसे अधिक विवेकशील प्राणी है। मानव में आवश्यकताएँ अनेक हैं जिनमें वे समाचार व सूचना भी एक है। मानव सामाजिक प्राणी होने के कारण प्रतिदिन विभिन्न प्रकार की सूचनाओं से अवगत होना चाहता है। इन सूचनाओं के अवगत होने का एक प्रमुख माध्यम समाचार-पत्र हैं। समाचार पत्रों में विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्रतिदिन प्रकाशित होती रहती हैं। लोग देश-विदेश की विविध खबरों एवं घटनाक्रम के विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु समाचार-पत्रों को पढ़ते हैं। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि मानव विश्व से जुड़े रहने के लिए समाचार-पत्रों के माध्यम से व्यापक ज्ञान प्राप्त करता है और मनुष्य के जिज्ञासु प्रवृत्ति की वजह से समाचार-पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ।

वास्तव में मानव जीवन में समाचार पत्रों का विशिष्ट योगदान है। 'इंडिया गजट' नामक समाचार-पत्र विश्व का और "उदन्त मार्तण्ड" हिन्दी का पहला प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र है।

हिन्दी का सर्वप्रथम समाचार-पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। आज हिन्दी-अंग्रेजी के सैकड़ों अखबारों में से प्रमुख हैं– हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान टाइम्स, नवभारत टाइम्स, टाइम्स ऑफ इंडिया, दैनिक जागरण, जनसत्ता, पंजाब केसरी, पायोनियर, इंडियन एक्सप्रेस, ट्रिब्यून, स्टेट्समैन आदि।

वर्तमान दौर में समाचार-पत्र एक ऐसा साधन बन चुका है जो मानव को सम्पूर्ण विश्व से जोड़ता है। प्रातः होते ही संसार की महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ समाचार-पत्र द्वारा हमारी टेबल पर उपलब्ध हो जाती हैं। अतः 'समाचार-पत्र संसार का दर्पण हैं' कहना गलत नहीं होगा। आधुनिक समय की गति एवं स्वभाव की जानकारी एवं देश के स्थिति जानने के लिए क्षेत्र का दैनिक समाचार-पत्र अवश्य देखना चाहिए। समाचार-पत्रों के माध्यम से लोकतन्त्र की रक्षा होती है।

लोकतन्त्र की सफलता हेतु यह जरूरी है कि जनता सब कुछ जाने और अपनी इच्छा-अनिच्छा को प्रकट करे। ऐसी जनता ही जागरूक और लोकतन्त्र के योग्य कही जाती है। दुनिया के बड़े-बड़े तानाशाह भी समाचार-पत्र से भयभीत रहते हैं।

समाचार-पत्र देश की जनता का पथ-प्रदर्शन करती हैं। समाचार-पत्रों के संपादक, संवाददाता या अन्य अधिकारी जिस समाचार को जिस ढंग से देना चाहें दे सकते हैं। वे किसी भी घटना को जनता के लिए सुखद या दुखद बनाकर पेश कर सकते हैं। समाचार-पत्रों में आम जनता के विचार जानने के लिए कॉलम भी होते हैं। उनके द्वारा जनता अपने विचार सरकार या समाज तक पहुँचाती है। इससे भी जनमत जानने में सहायता मिलती है। विभिन्न समाज-सुधारक चिन्तक, विचारक, आंदोलनकर्ता, क्रान्तिकारी अपने विचारों को समाचार-पत्रों में छापकर जनता को प्रभावित करते हैं।

पाठकों के ज्ञान वृद्धि में भी समाचार-पत्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। विशेष रूप से रविवारीय पृष्ठों में छपी जानकारियाँ, नित्य आविष्कार, नए साधन, नए पाठ्यक्रमों की जानकारी, अद्‌भुत संसार की अद्‌भुत जानकारियाँ पाठकों का ज्ञानवर्धन करते हैं। समाचार-पत्र में विभिन्न रोगों की जानकारी एवं उनके इलाज के उपाय भी प्रकाशित किये जाते हैं। पाठकों के मनोरंजन हेतु रंग बिरंगी सामग्री भी इसके अलावा छापे जाते हैं।

क्रीड़ा-जगत्, फिल्मी संसार, चुटकुले, कहानियाँ, पहेलियाँ, रंग-भरो प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चे, किशोर और तरुण भी समाचार-पत्रों का बेसब्री से प्रतीक्षा करते रहते हैं।

समाचार-पत्रों से आम जनता को लाभ मिलता है परन्तु इन पत्रों का सबसे अधिक लाभ उद्योगपतियों, कारखानों और वणिज्यिक संस्थानों को प्राप्त होता है। प्रचार एवं विज्ञापन के द्वारा इनका माल रातों-रात देशव्यापी बन जाता है। यह बेरोजगारों को रोज़गार दिलाता है, वर को वधू और वधू को वर दिलाता है, सूनी गोद वालों को बच्चे गोद दिलाता है। सम्पत्ति खरीदते-बेचने का काम आसान बनाता है। सोना-चाँदी एवं शेयरों के दैनिक भाव बताता है। समाचार-पत्र में पूरे विश्व की खबरें छपी रहती है इसलिए इसे लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है।

2

भ्रष्टाचार के बढ़ते कदम और उसकी रोकथाम

आधुनिक युग को यदि भ्रष्टाचार का युग कहा जाये तो शायद कोई गलत नहीं होगा क्योंकि आज विश्व के प्रत्येक क्षेत्र में यदि गौर किया जाये तो हर ओर भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार नजर आ रहा है। आज प्रत्येक मानव धन की लालसा दिन प्रतिदिन विकसित होती जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति अधिक धनी बनने की कामना के कारण अनेक प्रकार के अनुचित अथवा भ्रष्ट आचरण करता है। व्यापारी लोग अधिक धन कमाने के लिए खाने-पीने की सामान्य वस्तुओं में मिलावट करते हैं।

दूधिये सिंथेटिक दूध बेचकर लाखों लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करते हैं। इस दूध में यूरिया तथा अन्य हानिकारक पदार्थ मिलाए जाते हैं। कुछ समय पूर्व दूरदर्शन पर तथा समाचार पत्रों में बताया गया था कि कोल्ड ड्रिंक्स में भी कीटनाशक दवाइयों का अधिकतम प्रयोग किया जा रहा है। इसी प्रकार व्यापारी वर्ग ज्यादा मुनाफे के लिए करोड़ो लोगों को धीमा जहर पिला रहे हैं। नकली दवाइयाँ खाकर लाखों लोग अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं। फलों और सब्जियों को भी रासायनिक पदार्थों द्वारा अधिक आकर्षक बनाया जाता है।

भ्रष्टाचार के प्रसार के लिए टीवी को भी जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। क्योंकि तमाम चैनलों पर इतने अश्लील कार्यक्रम दिखाए जाते हैं कि किशोर तथा युवा वर्ग के लिए चरित्रहीनता आजकल सम्मान की वस्तु बन गयी है। अवैध सम्बन्धों को अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन दिया जा रहा है। फिल्मों में हिंसा और नग्नता का खुलेआम प्रदर्शन भी समाज की व्यवस्था को अपाहिज बनाने में पूरा योगदान दे रहा है।

आज फैशन के दौर में नारी को उत्पाद के रूप में पेश किया जा रहा है। प्रतिदिन हो रहे फैशन शो हमारी भ्रष्ट होती सामाजिक व्यवस्था का ही प्रमाण है। आजकल पारिवारिक सम्बन्धों में भ्रष्टाचार ने विष-बीज बो दिये हैं। तथाकथित 'कजिन' तथा 'अंकल' किस प्रकार शारीरिक शोषण करते हैं इसका प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है। अनेक परिवारों में निकट के रिश्तेदार किशोरियों तथा नवयौवनाओं को अपनी कामपिपासा की पूर्ति का साधन बनाते हुए जरा भी हिचकिचाते नहीं।

विभिन्न नवयुवतियों एवं बालिकाओं का जीवन दहेज प्रथा के कारण ही नरक के समान हो जाता है। कम दहेज वाली अधिकांश युवतियाँ आत्महीनता के बोध से ग्रस्त रहती हैं तथा उनसे मानसिक तथा शारीरिक दुर्व्यवहार किया जाता है। समाज में संभ्रांत लोग कर-चोरी जैसा अपराध धड़ल्ले से करते हैं तथा इसे भ्रष्टाचार का नाम देने से गुरेज करते हैं।

तमाम व्यवसायी विक्रय कर में घोटाला करते है। आयकर की चोरी तो अधिकांश लोग करते हैं। कस्टम विभाग में अनेक अधिकारी कस्टम कम लगाने के बदले रिश्वत की माँग करते हैं। अनेक बड़े व्यापारी तथा सामान्य लोग भी बिजली की चोरी करते हैं। यह सब कुछ सामाजिक भ्रष्टाचार के अन्तर्गत ही आता है।

आधुनिक समाज में लाखों युवतियाँ कालगर्ल जैसे धन्धे से जुड़ी हैं। लाखों स्त्रियाँ वेश्याएँ हैं। धन कमाने के लिए ये स्त्रियाँ समाज की व्यवस्था को विकृत करने का प्रयास कर रही हैं। समाज में मदिरा का प्रचलन बढ़ता जा रहा है।

मदिरा पीकर लोग अनेक प्रकार के अनैतिक कार्य करते हैं। इस प्रकार सामाजिक जीवन में भ्रष्टाचार अपनी विषबेल फैलाता जा रहा है। इसे रोकने के लिए 'संचार माध्यम' (मीडिया) बहुत सहायक हो सकता है तथा कठोर कानून भी इस पर रोक लगाने में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं।

3

युवा-पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव

दूरदर्शन विज्ञान की देन है। यह एक ऐसा दृश्य तथा श्रव्य साधन है जिसके द्वारा हम विश्व में घटित होने वाली विभिन्न घटनाओं को अपनी नंगी आँखों से देख व सुन सकते हैं। अतः दूरदर्शन ने समस्त विश्व को एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि दूरदर्शन ने समस्त विश्व के मानव समुदाय को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक-दूसरे को समझने हेतु महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आज दूरदर्शन की लोकप्रियता खूब बढ़ गयी है। रेडियो की तरह घर-घर दूरदर्शन को स्थान मिला है। दूरदर्शन दर्शकों का मित्र, पथ-प्रदर्शक तथा एकान्त का सार्थक साथी बन जाता है।

दूरदर्शन का पारिवारिक तथा सामाजिक स्तर पर विशिष्ट स्थान है। दूरदर्शन से व्यक्ति को विभिन्न प्रकार के लाभ होते है जैसे—दूरदर्शन एक शिक्षक की भूमिका निभाता है, दूरदर्शन पर प्रसारित किये जाने वाले कार्यक्रम समाज का दिशा-निर्देश करते हैं। घर-परिवार ही नहीं, विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में दूरदर्शन एक अध्यापक की भाँति कार्य करता है।

दूरदर्शन मनोरंजन का एक ऐसा साधन है जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने घर बैठे फिल्में, फिल्मी गीत, नाटक, झलकियाँ, कवि-सम्मेलन तथा विचार गोष्ठियाँ ही नहीं, देश-विदेश में हो रहे दैनिक क्रिया-कलापों को देख सकते हैं। दूरदर्शन पर हमें जीवनोपयोगी वस्तुओं के विषय में विज्ञापनों द्वारा जानकारी मिलती है। समय-समय पर महत्त्वपूर्ण समाचार तथा सूचनाएँ मिलने में आसानी हो गयी। गुमशुदा की तलाश तथा सामाजिक बुराइयों को दूर करने वाले कार्यक्रम हमारे ज्ञान, प्रेम तथा सौहार्द को बढ़ाने मे काफी सक्षम होते हैं।

देश-विदेश में हो रहे सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि कार्यक्रमों को व्यक्ति घर बैठे अपनी आँखों से दूरदर्शन के माध्यम से देख सकता है। दूरदर्शन की सहायता से हम घर बैठे देश-विदेश में खेले जा रहे किसी भी महत्त्वपूर्ण मंच को देख सकते हैं।

दूरदर्शन के आविष्कार से खेल जगत् को काफी प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। दूरदर्शन हमें मौसम सम्बन्धी जानकारी दे कर तरह-तरह से सावधान रहने में भी सहायता करता है। देश-विदेश में हो रही लड़ाइयों के दिनों में दूरदर्शन का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है।